Artistic Narration Vol. XIV No. 2 July-Dec. 2023 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247
Impact Factor 8.898 (SJIF)

महादेवी वर्मा के काव्य में प्रकृति–चित्रण

डॉ० शुभ्रा ज्योति
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
आर०एस०एस० पी०जी० कॉलेज, पिलखुआ, हापुड़
ईमेल : shubhrajyoti.rathi@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० शुभ्रा ज्योति

महादेवी वर्मा के काव्य में प्रकृति–चित्रण

Artistic Narration 2023, Vol. XIV, No. 2, Article No. 20 pp. 143-147

Online available at:
https://anubooks.com/journal/artistic-narration

सारांश

यूँ तो प्रकृति अनादि काल से ही कवियों को अपनी ओर आकर्षित करती रही है किंतु हिंदी कविता के आधुनिक युग के अंतर्गत प्रकृति–चित्रण कवि–कर्म का एक अत्यावश्यक अंश बन चुका है। विशेष रुप से छायावादी कविता तो प्रकृति–चित्रण से पूर्णरूपेण समृद्ध है। छायावादी कवियों ने अपने मन की पीड़ा का चित्रण करने के लिए मुख्य रूप से प्रकृति का ही आश्रय लिया। इन कवियों ने जड़ प्रकृति को चेतन रूप में प्रतिष्ठित करके उसमें अपने लिए सहानुभूति खोज निकाली। छायावादी कवियों की भांति महादेवी जी ने भी प्रकृति के प्रति सहानुभूति परक दृष्टि रखी। व्यक्तिगत रूप से उनका व्यक्तित्व करुणा, ममता, वेदना, विरह, सहानुभूति आदि भावों से परिपूर्ण होकर उनके प्रकृति वर्णन में परिलक्षित होता है। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि ''महादेवी जी ने प्रकृति को अत्यंत सहानुभूति की दृष्टि से देखा है। वह प्यारी इसलिए हो उठी है कि उसी के माध्यम से उन्होंने प्रियतम की झलक पाई है और अभिन्न इसलिए कि उनके साधना–यज्ञ में आहुति का काम करती है, प्रेम के भाव उद्दीपन में सहायक है।''[1]

महादेवी जी के काव्य में प्रकृति अनेक रूपों में वर्णित है, कहीं आलंबन रूप में तो कहीं उद्दीपन रूप में, कहीं मानवीकरण तो कहीं प्रतीकात्मक रूप में। कहीं प्रकृति उपदेश देती हुई प्रतीत होती है तो कहीं रहस्यवाद की चादर ओढ़े हुए है, तो कहीं पर अलंकारिकता से परिपूर्ण है। इस प्रकार यदि शास्त्रीयता की कसौटी पर कसें तब भी महादेवी का प्रकृति–चित्रण पूर्ण रूप से खरा उतरता है।

सर्वप्रथम महादेवी जी के काव्य में आलंबन रूप में प्रकृति चित्रण का अवलोकन करें। उन्होंने रजनी, संध्या, प्रभात, मेघ, वर्षा आदि प्राकृतिक उपादानों को अपने भावों का आधार बनाया है। यद्यपि यह सत्य है कि प्रकृति का आलंबन रूप में वर्णन करना महादेवी जी को बहुत प्रिय नहीं है तथापि उन्होंने प्रकृति के इस रूप को त्यागा नहीं। प्रभात का दृश्य देखते ही बनता है –

''चुभते ही तेरा अरुण बान
बहते कन–कन से फूट–फूट,
मधु के निर्झर से सजल गान।
इन कनक रश्मियों में अथाह,
लेता हिलोर तम सिंधु जाग।''[2]

इसी प्रकार महादेवी जी ने हिमालय की शोभा का अत्यंत ही मनोहारी वर्णन किया है। यहां वे किसी चित्रकार से श्रेष्ठ ही मानी जाएंगी। ''यदि किसी रम्य दृश्य की वर्णन–पटुता ही देखनी है, तब हिमालय पर मंडराते इन काले बादलों को देखिए। इस चित्र में 'रूप' की रेखाएं कितनी स्पष्ट और सजीव तथा 'वर्ण' की तूलिकाएं कितनी उपयुक्त और सधी हैं। साथ ही बादलों के घिरने–घुमडने से चित्र को जो 'गति' प्रदान की है, उन्हें चित्रकार किस कौशल से प्रदर्शित करेगा?''[3]

''तू भू के प्राणों का शतदल !
सित क्षीरफेन हीरक–रज से
जो हुए चांदनी में निर्मित
पारद की रेखाओं में चिर
चांदी के रंगों से चित्रित ,
खुल रहे दलों पर दल झलमल।
सीपी से नीलम से द्युतिमय
कुछ पिंग अरुण कुछ सित श्यामल
फैले तम से कुछ तूल विरल
मंडराते शत–शत अलि बादल''[4]

महादेवी जी का मन प्रकृति के उद्दीपन रूप में खूब रमा है। इसमें कोई संदेह नहीं कि उन्होंने प्रकृति के विभिन्न उपादानों को अत्यंत भावुकता, मादकता एवं करूण रूप में चित्रित किया है। विरह हो चाहे मिलन प्रकृति दोनों ही स्थितियों में उन्हें अत्यंत प्रिय रही है। निम्न काव्यांश देखिए–

''प्रिय सान्ध्य गगन मेरा जीवन
इच्छाओं के सोने से शर
किरणों से द्रुत झीने सुंदर
सूने असीम नभ में चुभकर
बन–बन जाते नक्षत्र–सुमन।''[5]

इसी प्रकार–

''बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ।
नयन में जिसके जलद वह तृशित चातक हूँ।
फूल को उर में छुपाए विकल बुलबुल हूँ।
नील घन भी हूँ सुनहली दामिनी भी हूँ।''[6]

सच तो यह है कि ''कोकिल की वाणी महादेवी के हृदय में करूण भावों का संचार करती, अनिल प्रिय का संदेशवहन करता, बेंत के वनों का निःस्वन करूण विहाग गाता प्रतीत होता है, शेफाली जब सकुचाती, लजाती हुई खिलती है तब महादेवी भी ना जाने क्या–क्या सोचने लगती हैं।''[7]

छायावादी कवियों ने प्रकृति पर सर्वत्र चेतना को आरोपित किया है फिर भला महादेवी जी उससे अछूती कैसे रह सकती थीं। निसंदेह मानवीकरण द्वारा किया गया प्रकृति–चित्रण उनके काव्य का सबल पक्ष है। उनकी कविताएं इस तथ्य की साक्षी हैं कि महादेवी ने जड़ प्रकृति को चेतन रूप में प्रस्तुत किया है। बसंत–रजनी का यह रूप निश्चित ही मनमोहक है–

''धीरे–धीरे उतर क्षितिज से आ वसंत रजनी
तरकमय नव वेणी बंधन
शीशफूल शशि का कर नूतन
रश्मि वलय, सित धन–अवगुण्ठन
मुक्ताहल अभिराम बिछा दे
चितवन से अपनी।
पुलकती आ वसंत रजनी''[8]

इसी प्रकार एक अन्य स्थान पर 'वर्षा सुंदरी के प्रति' गीत में महादेवी जी ने वर्शा को एक सुंदर स्त्री के रूप में चित्रित किया है –

''रूपसी! तेरा घन केश–पाश
श्यामल–श्यामल कोमल–कोमल
लहराता सुरभित केश–पाश।''[9]

इसी प्रकार वे नायक–नायिका की प्रथम भेंट का वर्णन भी प्रकृति से जोड़कर ही करती हैं–

''निशा को धो देता राकेश
चांदनी में जब अलकें खोल
कली से कहता था मधुमास
बता दो मधु–मदिरा का मोल।''[10]

महादेवी जी ने अपने काव्य में रहस्यवाद ही भावना की अभिव्यक्ति के लिए प्रकृति का प्रतीकात्मक रूप में भी चित्रण किया है। सच तो यह है कि ''अपने जीवन दर्शन का असीम से तादात्म्य स्थापित करने के लिए प्रकृति को माध्यम बनाना महादेवी की अपनी विशेषता है। हिंदी के वर्तमान कवियों में महादेवी जी ने प्रकृति के द्वारा अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति दी है और विराट की प्रेमानुभूति के लिए उसके व्यक्तित्व को विशालता तथा भव्यता दी है यह उनके लिए प्रकृति की सबसे बड़ी देन है।''[11] उनके काव्य में प्राण का प्रतीक तोता, योवन का

प्रतीक वसंत, संसार का प्रतीक नदी, ज्ञान का प्रतीक रश्मि, अज्ञान का प्रतीक नीहार, व्याकुलता की प्रतीक लहरें वर्णित हैं। उदाहरणार्थ–

''तुम परिचित ऋतुराज मूक मैं
मधुश्री कोमल गात।''[12]

x x x x x

''तुम हो विधु के बिंब
और मैं मुग्धा रश्मि अजान''[13]

x x x x x

''तुम असीम विस्तार ज्योति के
मैं तारक सुकुमार ''[14]

x x x x x

''सुरभि बन जो थपकियां देता मुझे
नींद के उच्छ़वास सा वह कौन है?''[15]

प्रकृति चित्रण का एक और सशक्त तथा सर्वप्रचलित रूप जिसका उपयोग महादेवी जी ने किया है, वह है अलंकार योजना के रूप में प्रकृति–चित्रण। उन्होंने अपने अनेकानेक उपमानों का चयन प्रकृति से ही किया है। वसंत और पावस ऋतु से लिए गए उपमान उनके जीवन के सुख और दुख के सूचक हैं। इनके अतिरिक्त भ्रमर, चातक, मयूर, कोयल, चकोर आदि पक्षी, कमल, हरसिंगार, गुलाब आदि पुष्प, प्रभात, संध्या, रात्रि आदि समय कुछ ऐसे ही उदाहरण हैं। इनके अतिरिक्त अरुण–किरण, राकेश, नक्षत्र, क्षितिज, आकाश, घन, मेघ, बदली, तिमिर आदि का प्रयोग भी महादेवी जी ने अलंकार योजना के रूप में किया है। उदाहरणार्थ –

''मुस्काता संकेत भरा नभ
अलि क्या प्रिय आने वाले हैं''[16]

x x x x x

''प्रिय सांध्य गगन मेरा जीवन''[17]

x x x x x

''शशि के दर्पण में देख–देख
मैंने सुलझाए तिमिर केश''[18]

कहीं–कहीं महादेवी जी के काव्य में प्रकृति उपदेशात्मक रूप में भी चित्रित हुई है।

'आंसुओं के देश में' गीत का यह अंश उल्लेखनीय है–

''यह बताया झर सुमन ने
यह बताया मुक तृण ने
यह कहा बेसुध पिकी ने
चिर पिपासित चातकी ने
सत्य जो दिव कह न पाया था अमिट संदेश में
आंसुओं के देश में।''[19]

अंत में हम कह सकते हैं कि महादेवी जी की प्रारंभिक कविताओं में प्रकृति के प्रति शिशु जैसा आकर्षण व कौतूहल का भाव है। 'नीहार' की 'रजनी झिलमिल तारों की जाली' ओढ़ कर जाती थी। वास्तव में प्रकृति उनके लिए श्रृंगार की वस्तु है, प्रियतम की ओर संकेत करने वाली सहचरी है, साथ ही वह भावुकता से भरी अलंकृत नायिका है या फिर चिर वियोगिनी। 'नीर भरी बदली' उन्हें प्रिय है। निजी भावों की पृष्ठभूमि में प्रकृति का साथ वे छोड़ना नहीं चाहतीं। यही कारण है कि महादेवी अपने जीवन की उदासी का वर्णन भी प्रकृति के साथ ही करती हैं–

''मैं नीर भरी दुख की बदली
विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होना
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली''[20]

संदर्भ ग्रन्थ

1. मानव, प्रोफेसर विश्वंभर. महादेवी की रहस्य साधना. पृष्ठ **75.**
2. (2007). संधिनी. लोकभारती प्रकाशनः इलाहाबाद. पृष्ठ **37.**
3. मानव, प्रोफेसर विश्वंभर. महादेवी की रहस्य साधना. पृष्ठ **79.**
4. संधिनी. पृष्ठ **133.**
5. संधिनी. पृष्ठ **84.**
6. संधिनी. पृष्ठ **67.**
7. मानव, प्रोफेसर विश्वंभर. महादेवी की रहस्य साधना. पृष्ठ **76.**
8. संधिनी. पृष्ठ **60.**
9. नीरजा.
10. संधिनी. पृष्ठ **23.**
11. सिंह, डॉ0 पदम., कमलेश. शर्मा. महादेवी. पृष्ठ **184.**
12. सांध्य गीत.
13. संधिनी. पृष्ठ **54.**
14. संधिनी. पृष्ठ **54.**
15. रश्मि.
16. संधिनी. पृष्ठ **74.**
17. संधिनी. पृष्ठ **84.**
18. सांध्य गीत.
19. संधिनी. पृष्ठ **121.**
20. संधिनी. पृष्ठ **93.**